B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-1
HISTORY HONS.
UNIT-2(II)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KUMAR MISHRA
DATE-6/11/2020

TOPIC- जैन धर्म की भारतीय संस्कृति की देन

PART-3

Scanned with CamScanner

जैन धर्म की भारतीय संस्कृति को देन, भाग-3

अन्य क्षेत्रों में योगदान

जैन धर्म ने तत्कालीन सांस्कृतिक विषमता के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की थी। उसने ब्राह्मण धर्म की वर्णव्यवस्था का विरोध किया और उसमें व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। जैन धर्म ने जन्म के आधार पर उच्चता और नीचता का निर्णय करने वालों को करारा जवाब दिया। कर्म के आधार पर ही व्यक्तित्व की पहचान पर जोर दिया। अपमानित और अचल संपत्तिवत् मानी जाने वाली नारी के प्रति आत्मसम्मान और गौरव की भावना को पुनः जागृत किया। उसे धर्मग्रंथों को पढ़ने का अधिकार ही नहीं दिया अपितु मोक्ष की उत्तराधिकारिणी भी माना। इस प्रकार जैन धर्म ने सामाजिक समानता को पुनः प्रतिष्ठित किया।

जैन धर्म ने सांस्कृतिक समन्वय और एकता की भावना को भी सफल बनाया। विचार समन्वय के लिए अनेकांत दर्शन की देन दी। आचार समन्वय की दिशा में मुनि-धर्म और गृहस्थ धर्म की व्यवस्था दी। इस प्रकार, प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों मार्गों का समन्वय किया गया। जैन धर्म ने संप्रदायवाद, जातिवाद, प्रांतीयतावाद, भाषावाद आदि सभी मतभेदों को त्यागकर राष्ट्रदेवता को बड़ी उदार और आदर की दृष्टि से देखा है। उसने भारत के किसी एक भाग विशेष को ही अपनी श्रद्धा का, साधना का और चिंतन का क्षेत्र नहीं बनाया। वह संपूर्ण राष्ट्र को अपना मानकर चला। जैन-धर्म अपनी समन्वय भावना के कारण ही सगुण और निर्गुण भक्ति के विवाद में नहीं पड़ा। प्राचीन साहित्य के संरक्षक के रूप में जैन धर्म की विशेष भूमिका रही है। जैन साधुओं ने जीर्ण-शीर्ण एवं दुर्लभ ग्रंथों का प्रतिलेखन कर उनकी रक्षा की और स्थान-स्थान पर ग्रंथ भंडारों की स्थापना कर, इस अमूल्य निधि को सुरक्षित रखा। ये ग्रंथ भंडार इस दृष्टि से राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं।

निष्कर्ष: सामान्यतः यह कहा जाता है कि जैन धर्म ने संसार को दुःखमूलक बताकर निराशा की भावना फैलाई है, जीवन में संयम और विराग की अधिकता पर बल देकर उसकी अनुराग भावना और कला-प्रेम को कुंठित किया है। परन्तु इस प्रकार के विचार भ्रान्तिमूलक हैं। जैन धर्म ने यह सब कुछ किसलिए किया? अखंड आनंद की प्राप्ति के लिए, शाश्वत सुख की उपलब्धि के लिए। उसमें तो मानव को महात्मा बनाने की, आत्मा को परमात्मा बनाने की आस्था का बीज छुपा हुआ है। उसी ने ईश्वर के नाम पर अपने को असहाय और निर्बल समझी जाने वाली जनता को आत्म-जागृति का संदेश दिया था। उसी ने मानव-हृदय में छिपे पुरुषार्थ को जगाया और मनुष्य को अपने भाग्य का विधाता बनाया। जैन धर्म की यह विचारधारा युगों बाद आज भी बुद्धिजीवियों की धरोहर बनी हुई है तथा संस्कृति को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान कर रही है।
आधुनिक भारत नवनिर्माण की

Scanned with CamScanner

सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनैतिक और आर्थिक प्रवृत्तियों में जैन धर्मावलंबियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही है। अहिंसा, सत्याग्रह, भूमिदान, संपत्तिदान, भूमिसीमाबंदी, आयकर प्रणाली, धर्मनिरपेक्षता जैसे सिद्धांतों और कार्यक्रमों में जैन-दर्शन की भाव धारा न्यूनाधिक रूप से प्रेरक कारण रही है।

Pankaj
6/11/2020